Semester 1

Paper 2

भारखण्ड का इतिहास C_2

भारखण्ड का भौतिक स्वरूप- अध्याय I

Scanned with CamScanner

SEMESTER-ONE PAPER II

झारखंड का इतिहास - C2

झारखंड का भौतिक स्वरूप - अध्याय.1

प्रश्न - झारखंड के वन-संसाधन का विवरण दें।

राज्य की आर्थिक स्थिति में वनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। झारखंड में वनों का विस्तार 23,147.4 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है और यह राज्य के कुल भू-क्षेत्रफल का 29.81% है। यद्यपि 20वीं शती तक राज्य में वन-विस्तार बहुत अधिक था, जो वैध अवैध कटावों से कम होता गया। 80के दशक में केंद्र सरकार ने वन संरक्षण अधिनियम लागू किया, जिससे वनों के अवैध और अनावश्यक कटाव में कमी आई

राज्य में वनों को दो वर्गों में सुरक्षित और संरक्षित रखा गया है। 19 प्रतिशत सुरक्षित वन क्षेत्र और 81 प्रतिशत क्षेत्र संरक्षित वन की श्रेणी में आता है ऐसे तो सारा राज्य ही वनों से आच्छादित है, लेकिन गिरिडीह, हजारीबाग, सरायकेला, चतरा, पलामू, गढ़वा और सिंहभूम के तीन चौथाई भाग पर वनों का विस्तार है।

Scanned with CamScanner

वनों से राज्य को अनेक लाभ होते रहे हैं। वनोत्पादन में इमारती और जलावन लकड़ी के अलावा बाँस, लाह, गोंद, शहद, तेंदुपत्ता, कत्था, महुआ और पशुओं के लिए चारा मिलता है। राज्य में वनों की लकड़ी की उत्पादकता दर 83 लाख घन मीटर लकड़ी प्रतिवर्ष प्राप्त हो ही जाती है। इन ~~लकड़ियों~~ लकड़ियों में शीशम, साल, महुआ, आम, कटहल, अर्जुन, सेमल, कुसुम आदि प्रमुख हैं।

लाह इन वनों का मुख्य उत्पाद है, जो मुलायम डालों में रहने वाले लाह के कीड़ा के शरीर से निकले चिकने और चिपचिपे पदार्थ से मिलता है। प्रतिवर्ष लाह को चार बार पका किया जाता है। गर्मी के मौसम में लाह का उत्पादन लगभग 82 प्रतिशत होता है। जबकि सर्दी में 18 प्रतिशत। लाह को शुद्ध करने के लिए राज्य में लगभग 37 कारखाने हैं। लाह का प्रयोग वार्निश, चमड़ा उद्योग, दवाओं, बरतन, विद्युत-निरोधक वस्तुओं आदि को बनाने में किया जाता है। जनजातीय ग्रामीण जनजीव

केन्द्र सरकार द्वारा भी वनों की सुरक्षा और संवर्धन नीति के द्वारा एवं कठोर नियमों के माध्यम से अवैध ढंग से वनों का कटाव को रोकने का प्रयास किया जा रहा है। संयुक्त वन प्रबंधन की नीति एक सफल और सटीक नीति है, जो वनों के प्रति सरकारों सरकारों के ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों के कर्तव्यों का भी बोध कराती है। भारत

झारखंड में वन संवर्द्धन और प्रबंधन की विधिवत शिक्षा के लिए राँची में 'बिरसा कृषि विश्वविद्यालय' से संबद्ध वानिकी कॉलेज में वानिकी संकाय की स्थापना करके युवाओं को इस दिशा में प्रेरित किया जा रहा है। केंद्र संपोषित राष्ट्रीय वानिकीकरण योजना से राज्य में 18 प्रादेशिक एवं वन्य मंडलों में वन विकास अभिकरण का गठन हुआ है, जिनको योजनाओं के संचालन के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रर्याप्त राशि उपलब्ध कराई जाती है।

Rajshree Kumari
Asst. Prof.
Dept. of Histo
G.N.S.M.C
Garhwa

Scanned with CamScanner